Tender Heart High School, Sector- 33-B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं विषय - हिन्दी साहित्य
दिनांक - 18 अप्रैल, 2024- शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ-10 'दो कलाकार' (कहानी) लेखिका मन्नू भण्डारी

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-
"पर सच कहती हूँ कि मुझे ---- इतनी बेमतलब लगती है कि बता नहीं सकती।"

प्रश्न (i) वक्ता को किसकी कला निरर्थक लगती है और क्यों ?

उत्तर - प्रस्तुत वाक्य में वक्ता अरुणा है और उसे अपनी सहेली चित्रा की कला निरर्थक लगती है। उसका मानना है कि इन निर्जीव चित्रों को बनाने में समय बेकार करने से कहीं बेहतर है कि जीवित प्राणियों का कुछ भला किया जाए। समाज के निचले वर्ग के निर्धन, असहाय तथा शोषित लोगों की सहायता करके उनके जीवन को बेहतर बनाया जाए। साथ ही उसका यह भी मानना था कि मॉडर्न आर्ट के प्रतीकात्मक और निर्जीव चित्रों को बनाने में केवल अपना समय व्यर्थ करना है।

प्रश्न (ii) वक्ता ने उसकी कला पर व्यंग्य करते हुए क्या कहा और उसे क्या सलाह दी ?

उत्तर - वक्ता अर्थात् अरुणा ने उसकी अर्थात् चित्रा की कला पर व्यंग्य करते हुए कहा किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे। वह चित्रा से यह भी कहती है कि दुनिया में चाहे कितनी ही बड़ी घटना घट जाए, पर यदि उसमें चित्रा को अपने चित्रों के लिए कोई आईडिया नहीं मिल पाए तो वह घटना चित्रा के लिए कोई महत्त्व नहीं रखती है। हर समय वह अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है।

इसके बाद वह चित्रा को सलाह देते हुए कहती है कि

कागज पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने के बजाए दो -चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती। उसके पास तो सामर्थ्य और साधन दोनों हैं। यदि वह किसी गरीब की सहायता करे, किसी की ज़िंदगी सँवार दे तो वे उसे आशीष ही देंगे।

प्रश्न (iii) वक्ता की बात पर श्रोता ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की ?

उत्तर - वक्ता (अरुणा) की बात सुनकर श्रोता (चित्रा) ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा - "वह काम तो तेरे लिए छोड़ दिया है। जब मैं विदेश चली जाऊँगी तो तू जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।" इतना कहकर चित्रा हँसती है और अरुणा का मज़ाक उड़ाती है।

प्रश्न (iv) आपके अनुसार सच्ची कला की क्या पहचान है ?

उत्तर - हमारे अनुसार सच्ची कला वह है जो हमारे हृदय को तो प्रसन्नता दे ही, साथ उस कला के द्वारा किसी निर्धन, असहाय, पीड़ित और शोषित व्यक्ति के जीवन में भी सुधार आ सके। दीन-दुखियों के दुःखों को दूर करना उन्हें समर्थ बनने में मदद करना ही सच्ची कला है।

(2) निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"वह काम तो तेर लिए छोड़ दिया। मैं चली जाऊँगी तो जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।"

प्रश्न (i) वक्ता और श्रोता का परिचय दीजिए।

उत्तर - प्रस्तुत गद्यांश में वक्ता चित्रा है और श्रोता अरुणा है। दोनों एक ही हॉस्टल में एक ही कमरे में रहती है दोनों सहेली तथा सहपाठिन हैं।

चित्रा एक संपन्न परिवार की इकलौती बेटी है। उसके पिता उसके हर काम में उसका सहयोग करते हैं। वह एक श्रेष्ठ चित्रकार है। उसके कई चित्रों के लिए उसे पुरस्कार मिल चुके हैं। उसे दीन-दुनिया से कोई सरोकार नहीं था। उसमें भावुकता तथा संवेदनशीलता नाम मात्र भी नहीं थी। प्रस्तुत संवाद में श्रोता अरुणा है। उसके जीवन का उद्देश्य समाज के गरीब, शोषित और असहाय वर्ग की सहायता करके

उनके जीवन को बेहतर बनाना है। उसकी दृष्टि में चित्रा की चित्रकारी किसी काम की नहीं है क्योंकि इन कागज़ों में उतरे गए चित्र तो मानवीय संवेदनाओं से भरे होते थे मगर इन्हें बनाने वाली चित्रा अमानवीय भावों से भरी थी और केवल खुद की प्रसिद्धि चाहती थी।

प्रश्न (ii) 'वह काम तो तेरे लिए छोड़ दिया है।' — से वक्ता का संकेत किस ओर है? वक्ता और श्रोता में अपने-अपने कामों को लेकर किस प्रकार की नोंक-झोंक चलती रहती थी?

उत्तर - 'वह काम' से वक्ता (चित्रा) का संकेत अरुणा के संवाद की तरफ है। वह अरुणा से ऐसा इसलिए कह रही है क्योंकि अरुणा को चित्रा की पेंटिंग में कुछ भी खास बात नज़र नहीं आती। वह उसके काम की आलोचना करते हुए कहा करती है कि हर समय, हर जगह और हर चीज़ में वह अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है। कागज़ पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने के बजाए दो-चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती। तेरे पास सामर्थ्य है, साधन है।

वक्ता और श्रोता में अपने-अपने कामों को लेकर इस प्रकार की नोंक-झोंक चलती रहती थी कि अरुणा (श्रोता) को हमेशा यह शिकायत रहती थी कि ऐसी कला (चित्रा की चित्रकला) का क्या फ़ायदा जो आदमी को आदमी न रहने दे। इसके बजाय किसी ज़रूरतमंद की ज़िंदगी क्यों नहीं सँवार देती, तेरे पास साधन है, सामर्थ्य है। तब चित्रा हमेशा कह देती थी कि गरीब बच्चों को पढ़ा कर ही अपने-आपको भारी पंडिताइन और समाज-सेविका समझती है।

प्रश्न (iii) वक्ता कहाँ जा रही थी और क्यों? क्या वह वहाँ जाकर सफल हो पाई?

उत्तर - चित्रा एक चित्रकार है। वह धनी पिता की पुत्री है। वह अपनी कला (चित्रकारी) की आगे पढ़ाई करने के लिए विदेश जा रही थी।

हाँ, वह विदेश जाकर सफल हो पाई। वहाँ जाकर उसकी लगन ने उसकी कला को निखार दिया। विदेश में उसके चित्रों की धूम मच गई। भिखारिन तथा उसके दो बच्चों

वाला चित्र जो उसने बनाया था, उसकी प्रशंसा में तो अनेक अखबारों में लेख भी छप गए थे।

प्रश्न (7) वक्ता और श्रोता के जीवन उद्देश्यों में अंतर होते हुए भी उनमें घनिष्ठ मित्रता थी - स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - वक्ता और श्रोता - दो सहेलियाँ थीं। उन दोनों के जीवन उद्देश्यों में, सोच में बहुत अंतर था। वे दोनों अपने - अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित थीं। हॉस्टल में दोनों एक ही कमरे में रहती थी और एक - दूसरे के प्रति सच्ची मित्रता रखती थीं। दोनों ही अपने-अपने जीवन-उद्देश्य को अपने नज़रिए से देखती थीं और उसे ही श्रेष्ठ मानती थीं। अपनी इसी सोच से आगे भी बढ़ रही थीं। वे दोनों मित्रता करने के लिए सोच और जीवन उद्देश्यों का समान होना ज़रूरी नहीं समझती थीं। इसी सोच को आगे रखकर वे सहेलियाँ बनी थीं और उनमें घनिष्ठ मित्रता थी।

Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा- दसवीं
दिनांक - 18 अप्रैल, 2024.

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर
पाठ - 10 'दो कलाकार'

लेखिका - मन्नू भण्डारी

* निम्नलिखित अवतरणों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

" अरे, यह क्या ? इसमें तो सड़क, आदमी ट्राम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है ?"

प्रश्न (क) 'अरे, यह क्या ?' — इस कथन का वक्ता कौन है और श्रोता कौन है ? उपर्युक्त कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - यह कथन अरुणा ने चित्रा से कहा है। यहाँ अरुणा और चित्रा के बीच चित्रा के द्वारा बनाए गए चित्र को लेकर विवाद हो रहा है। चित्रा एक कलाकार है जिसे विभिन्न प्रकार के चित्र बनाने में रुचि है। अभी उसने एक चित्र बनाया है उसमें बहुत सी चीज़ें और आदमी आदि सभी एक-दूसरे पर चढ़ते दिखाई दे रहे थे। उसी चित्र को देखकर अरुणा उपर्युक्त वाक्य कहकर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट कर रही है।

प्रश्न (ख) चित्र को चारों ओर घुमाते हुए वक्ता ने श्रोता को चित्रों के संबंध में क्या सुझाव दिया ?

उत्तर - चित्र को चारों तरफ़ घुमाते हुए वक्ता अर्थात् अरुणा ने कहा कि तू ही बता दे कि मैं इस चित्र को किधर से देखूँ। मुझे तो किसी तरह भी समझ में नहीं आ रहा है कि चौरासी लाख योनियों में से आखिर यह किस जीव का चित्र है ? साथ ही उसने श्रोता अर्थात् अपनी सहेली चित्रा को यह सुझाव दिया कि तुझसे हज़ार बार कहा है कि जिसका चित्र बनाए, उसका नाम लिख दिया कर, जिससे कोई गलतफ़हमी न हुआ करे, वरना तू बनाए हाथी और समझें उल्लू। उसने यह भी कहा कि वह किसी तरह नहीं समझ पा रही है कि चौरासी

लाख योनियों में से आखिर यह किस जीव की तस्वीर है।

प्रश्न (ग) 'खिचड़ी पकाकर' और 'घनचक्कर' शब्दों का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि इनका प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है और क्यों ?

उत्तर- 'खिचड़ी पकाकर' का आशय है- सब कुछ मिला देना। 'घनचक्कर' शब्द का आशय है – चक्कर में डालने वाला। यहाँ पर 'खिचड़ी पकाकर' मुहावरे का प्रयोग चित्रा के द्वारा बनाए गए चित्र के संदर्भ में किया गया है क्योंकि चित्रा, जो कलाकार है, उसके द्वारा एक चित्र बनाया गया है जिसमें आदमी, ट्राम, बस, सड़क, मकान सबको दिखाया गया है लेकिन सब एक-दूसरे के ऊपर चढ़े हुए हैं। यह चित्र अरुणा को इसी कारण समझ में नहीं आ रहा था, इसलिए वह कहती है कि यह क्या घनचक्कर बनाया है। इस चित्र को देखकर उसे बड़ा 'कन्फ्यूज़न' यानि भ्रम हो रहा था कि चित्रा इसके माध्यम से क्या दिखाना चाह रही है। उसने आखिर ऐसा चित्र किस उद्देश्य से बनाया है।

प्रश्न (घ) श्रोता ने अपने चित्र को किसका प्रतीक बताया ? वक्ता ने उसकी खिल्ली किस प्रकार उड़ाई ?

उत्तर- श्रोता अर्थात् चित्रा ने अपने द्वारा बनाए गए चित्र के विषय में बताया कि यह चित्र आज की दुनिया में 'कन्फ्यूज़न' का प्रतीक है।

चित्रा की यह बात सुनकर अरुणा ने चित्रा की खिल्ली उड़ाते हुए कहा कि मुझे तो तेरे दिमाग के कन्फ्यूज़न का प्रतीक नज़र आ रहा है, बिना मतलब ऐसे चित्र बनाकर अपनी ज़िंदगी खराब कर रही है।

[अंतिम पृष्ठ]